का विचार करते समय हम भारत के लोग सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के समर्थक हैं, जो सकारात्मक है, जो मानवीयता की दृष्टि देने वाला है। राजनैतिक राष्ट्रवाद, ये नकारात्मक है। युद्ध को आमंत्रण देता है, यह दूसरों को समाप्त करने की चिन्ता करता है, अपना प्रभुत्व स्थापित करने का विचार करता है। इन दोनों विषयों में एक मूलभूत अन्तर है। यह समझने की आवश्यकता है।

इटली के मैजिनी ने बहुत अच्छी इस राष्ट्रीयता को लेकर उन्होंने कुछ सूत्र लिखे हैं। उसमें एक सूत्र है। वह सूत्र में कहते हैं कि प्रत्येक समूह वह जन शब्द का प्रयोग करते हैं। प्रत्येक जन यानि एक-एक नहीं। जन यानि समूह, अलग-अलग गुटों में लेने वाला समूह होगा। उस समूह का अपना एक जीवन का लक्ष्य होता है और वह जीवन का लक्ष्य मानवीयता का पोषण करने वाला, वह पोषण करने की जो प्रवृति है वह उस समूह की राष्ट्रीयता मानी जाती है। बहुत ही स्पष्ट उस मैजिनी ने अपनी कल्पनाओं को बहुत ही स्पष्ट किया है कि वह मानवीयता का पोषण करता है, वह उसकी राष्ट्रीयता है। परन्तु दुर्भाग्य रहा कि उनके ही देश इटली में फासीवाद का जन्म हुआ। जिन्होंने उस नकारात्मक राष्ट्रवाद को स्वीकार करते हुए सारे विश्व के सामने, मानवजाति के सामने एक समस्या निर्माण कर दी कि हमारे मार्ग से ही आपको चलना पड़ेगा। यह फासीवाद है। कभी-कभी लोग संघ को भी फासीवादी कहते हैं। वे क्यों कहते हैं, मुझे पता नहीं है अभी तक। लेकिन इस प्रकार की बहुत विचारों की स्पष्टता रखी गयी। अब कभी-कभी विचार आता है कि प्रमाणिकता से विचार करने वाले मैजिनी और हमारे यहां के ऋषि-मुनियों ने जो राष्ट्रवाद की कल्पना की उसमें अन्तर क्या है? वह एक ही भाव प्रकट कर रहा है और इसलिए सकारात्मक विचार करने वाले लोग जब कोई विचार रखते हैं तो भारत के विचारों के साथ मेल खाने वाला इसी प्रकार का चिन्तन हम सबके सामने आता है। आगे वे कहते हैं कि राष्ट्रवाद क्या है? वे कहते हैं राष्ट्रवाद एक सार तत्व है, आध्यात्मिक है। ये कल्पनाएं आध्यात्मिक हैं और विश्व कल्याण और मानव कल्याण की बात करने वाले हैं। इसका काम क्या है? तो यह कहा गया है कि समृद्ध और श्रेष्ठ परम्पराओं को दुनिया में बांटने के लिए जाना, ये राष्ट्रवाद का आध्यात्मिक सार है। श्रेष्ठ परम्परा, श्रेष्ठ संस्कृति और श्रेष्ठ जीवन-मूल्यों को दुनिया भर में बांटने के लिए जाना और सामंजस्य पूर्ण व्यवहार आपको श्रेष्ठ जनसमूह में होने चाहिए, मिलजुल कर रहना चाहिए यह संदेश देना,